गाँधी एवं नेहरू के आलोचक के रूप में उग्र वामपंथः फारवर्ड ब्लॉक

*डॉ. हंसकुमार शर्मा
**श्याम प्रकाश पारीक

शोध सारांश

सुभाष चन्द बोस के प्रेरणादायी नेतृत्व में वामपंथ ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अन्दर एक उग्र स्वरूप धारण किया। सुभाष एवं नेहरू दोनों ने 1922 में असहयोग आन्दोलन के आकस्मिक स्थगन की आलोचना करके समाजवादी मार्ग को लोकप्रिय बनाने व उसे स्वाधीनता संघर्ष से सम्बद्ध करने का नया रास्ता तलाशना शुरू किया उक्त में गॉधीजी के असहयोग व अहिंसा के कार्यक्रमों के मुखर आलोचक के रूप में, सुभाषचन्द्र बोस ने चितरंजनदास के नेतृत्व वाले 'स्वराज दल' की सदस्यता ग्रहण की एवं 1928 में प्रस्तुत नेहरू प्रतिवेदन की तैयारी में प्रमुख भूमिका निभायी। उन्होंने स्वाधीनता संग्राम के विकास के साथ ही श्रमिक आन्दोलन के विकास को सराहा, क्योंकि असहयोग के किसी भी अभियान में श्रमिक वर्ग जनता के पक्ष में अपना पूर्ण सहयोग देगें।

1930 मे सुभाषचन्द बोस ने राजनीतिक वास्तविकता पर अपना विश्वास प्रकट करते हुऐ 'धर्म और राजनीति' या '**सीजर और ईसा मसीह**' को न मिलने की बात कहीं। 1931 के द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में गॉधी जी की दब्बू भूमिका पर प्रहार करते हुऐ कहा कि, "राजनीतिक सौदे का मुख्य मंत्र यह है कि आप वास्तविकता से अधिक शक्तिशाली दिखाई दे। गाँधी जी ने यदि तानाशाह स्टालिन, मुसोलोनी या हिटलर की भाषा मे बात की होती तो उसे अंग्रेज समझते व उनके सम्मान में अपना सिर झुकाते।"

उनके लिए 1935 के भारत सरकार अधिनियम में प्रस्तावित संघ की योजना का विरोध करे तथा गाँधीजी व देश के अन्य उदारवादियों द्वारा अपनाये गए संविधानवाद पर प्रहार करे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की भूमिका से असन्तुष्ट होकर उन्होंने अपने नये दल के लिए निम्न योजना बनाई जिसमें प्रमुख मुद्दे निम्न थे।

1. जन साामान्य (किसान व मजदूरों आदि) के हितों की रक्षा।
2. भारत की संघात्मक व्यवस्था का समर्थन।
3. राज्य द्वारा नियोजन की स्वरूप पद्धति।
4. भारतीय जनता की पूर्ण राजनीतिक व आर्थिक स्वाधीनता
5. ग्राम समुदायों या आधारित नई सामाजिक संरचना
6. आधुनिक नई मुद्रा प्रणाली की स्थापना
7. जमीदारी का उन्मुलन
8. एक शक्तिशाली दल द्वारा अनुशासन में बंधी शासन व्यवस्था,
9. अन्तर्राष्ट्रीय प्रचार अभियान और
10. एक राष्ट्रीय कार्यपालिका के अधीन सभी उग्रवादी संगठनों को एक करने को प्रोत्साहन

वामपंथी आन्दोलन के इतिहास में सुभाष चन्द बोस द्वारा कांग्रेस की अध्यक्षता प्राप्त करना एक महान घटना है। 1938 में हरीपुरा अधिवेशन में जोशीला भाषण जिससे कांग्रेस के दक्षिणपंथीयों एवं गॉधी जी को पसंद नहीं आई द्वन्द्व का क्षण 1939 में त्रिपुरी कांग्रेस में सुभाष चन्द बोस को अध्यक्ष एवं गॉधी के समर्थित उम्मीदवार (पट्टा भी सीतारैमैया) को पराजय करके गहरी व स्पष्ट चोट की उक्त समय में अधिकांश मतों का विचार है दक्षिण पंथी कांग्रेसी व ब्रिटिश सरकार के बीच 'संघीय योजना' को लेकर भारत सरकार आगामी वर्ष में समझौते की संभावना एवं इसी कारण वामपंथी अध्यक्ष को अपनी राह में दक्षिणपंथी कांग्रेस के रूप में स्वीकार करना नहीं चाहते थे।

गाँधीजी की पराजय की कीमत बोस की विजय भारत में उग्र वामपंथ के विकास में महंगी साबित हुई बोस को उदारवादियों द्वारा गोविन्द बल्लभ पंथ के प्रस्ताव (कांग्रेस अध्यक्ष को महात्मा गाँधी के परामर्श से अपनी कार्य समिति बनानी चाहिऐ) का कांग्रेस द्वारा समर्थन उसी उद्देश्य की दिशा के एककदम था। बोस गहरे आक्रोश व निराशा के साथ कांग्रेस छोडते हुऐ कांग्रेस समाजवादी दल व नेहरू पर विश्वासघात का आरोप भी लगाया । उक्त विरोधी स्थितियों के कारण बोस ने कांग्रेस के सभी उग्र व साम्राज्य विरोधी तत्वों को एकजूट करने के लिए 3 मई 1939 को नये दल (फार्वड ब्लॉक) की स्थापना की जिसकी 1 जनवरी 1941 को उन्होंने अपने दल के निम्न मुख्य निदेशक सिद्धान्त बनाऐः–

1. पूर्ण राष्ट्रीय स्वाधीनता व गैर समझौतावादी साम्राज्यवादी विरोधी संघर्ष
2. एक आधुनिक व समाजवादी राज्य की स्थापना
3. देश के आर्थिक पूर्नजागरण के लिए वैज्ञानिक तरीके से भारी उत्पादन
4. उत्पादन वितरण पर सामाजिक नियंत्रण व स्वामित्व
5. धार्मिक उपासना के सम्बन्ध के व्यक्तिगत स्वतन्त्रता
6. प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार
7. भारतीय समुदाय के सभी वर्गो को भाषा व संस्कृति की स्वायत्ता और
8. स्वतन्त्र भारत की नई व्यवस्था के निर्माण में समानता व सामाजिक न्याय के सिद्धान्त का क्रियान्वयन

लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय राजनीति में प्रथम विश्व युद्ध के कारण सुभाषचन्द बोस के दिसम्बर, 1940 में गुप्त रूप से देश छोडने से फारवर्ड दल कोई महत्वपूर्ण दबाव नहीं डाल सका एवं उनके अनुयायी अपने नेता के महान नेतृत्व में 'आजाद हिन्द फोज' की उपलब्धियों की प्रशंसा व प्रचार–प्रसार करते रहे 18 अगस्त 1945 को फारमोसा के एक विमान दुर्घटना में उनकी दुर्भाग्यपूर्ण मृत्यु हो गई। उसके बाद फारवर्ड ब्लॉक के नेताओं ने सत्ता हस्तान्तरण से सम्बन्धित विभिन्न ब्रिटिश योजनाओं की आलोचना की उन्होंने धार्मिक व सामाजिक आधार पर देश को विभाजित करने का विरोध किया यद्यपि साम्यवादियों की भांति वे सांस्कृतिक तथा भाषा भी अल्पसंख्यकों के आत्मनिर्णय के विचार का समर्थन करते रहे उस समय में 1945 में द्वितीय विश्वयुद्ध एवं मित्र राष्ट्रों द्वारा राष्ट्रवाद की नई अवधारण एवं 1947 में स्वतन्त्र भारत की स्थापना एवं राष्ट्रीय राजनीति में कांग्रेस सरकार की स्थापना में साम्यवादी एवं समाजवादी विचारकों को हतोत्साहित किया एवं गॉधीवादी विचारक एवं सिद्धान्तों के क्षेत्रीय राजनीति तक सीमित व प्रचार–प्रसार रहा जबकि राष्ट्रीय आन्दोलन में फारवर्ड ब्लॉक का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। व्यक्तिवाद की राजनीति पं. बंगाल, केरल, चीन की सीमाओं में नेपाल की सीमावर्ति तट साम्यवादिवत के रूप में परिवर्तित हो गया। जो वर्तमान तक में कम्युनिष्ट साम्यवादी , समाजवादी दल के रूप में मार्क्सवादी विचारकों के समर्थित श्रमिक व ट्रेड यनियन के माध्यम से अधिकारों के प्रति जागरूकवाद सक्रियता बनाये रखने की वर्तमान में दबाव समूह के रूप में राजनीतिक समस्याओं के समाधान हेतु सक्रियता व सजकता में प्रेरकता की महत्वपूर्ण भूमिका

रही है। जबकि प्रबुद्ध वर्ग, चिन्तनशिल नागरिक लोकतांत्रिक समाजवादी विचारधारा भारतीय समाज मे कर्तव्यों को प्रधानता हेतु मार्गदर्शक रहे है जिन्हें संविधान एवं प्रशासनिक कार्यो में वर्तमान में प्रस्सुटीत एवं संशोधन में उक्त उद्देश्य प्रकट होते है।

**प्राचार्य
श्री वीर तेजाजी महाविधालय,
राडावास (जयपुर)
**शोधार्थी
दर्शनशास्त्र विभाग

संदर्भ सूची

1. अलेक्जेण्डर होरेंस तथा अन्यः सोशल एण्ड पॉलिटिकल आईडियाज ऑफ महात्मा गाँधी, नई दिल्ली 1947
2. महात्मागॉधीः कम्यूनिज्म एण्ड कम्यूनिस्ट, अहमदाबाद, 1959
3. आर.आर. दिवाकरः गाँधीजी बेसिक आईडियाज एण्ड सम मार्डन प्रोब्लम्स, बम्बई 1963
4. टाईबर मेण्डे, कन्वर्सेशन्स विथ नेहरू (संकर एण्ड बारबर्म, लंदन , 1956)
5. नेहरू, इंडियाज फ्रीडम, अनविन बुक्स लन्दन, 1965
6. जे.सी. जौहरी, भारतीय शासन एवं राजीनति, विशाल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1996